अध्याय 45

यूसुफ़ का उसके भाइयों के साथ पुनः मेल

अपने भाइयों को परखने के पश्चात, यूसुफ़ स्वयं को उनके सामने प्रकट करने को तैयार हो गया। उसने देखा कि अपने बुरे व्यवहार के लिए वे बहुत लम्बे समय से पछतावा करते रहे, और बिन्यामीन के लिए उनकी चिंता स्पष्ट दिखाई देती थी। वह समझ चुका था कि वे अब वैसे ही ईर्ष्या रखने वाले और स्वार्थी नहीं रहे जिन्होंने उसे दासत्व के लिए बेच दिया था। अब उन्हें देखने से प्रतीत होता है कि वे विश्वासयोग्य और अपने पूरे घराने के लिए प्रेम स्वरुप प्रेरणा हैं।

यूसुफ़ का स्वयं को अपने भाइयों पर प्रगट किया जाना, हृदय को छू लेने वाला दृश्य था। उसने आश्वासन जताया कि परमेश्वर ने उनके बुरे कार्यों के बदले भलाई प्रगट की; अपनी बहुतायत के अनुसार, अकाल से कई लोगों का जीवन बचाने के लिए उसने यूसुफ़ का प्रयोग किया। फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों को वापस लौट जाने को कहा और उनके पिता को यह समाचार देने को कहा। उसके घराने को मिस्र में गोशेन नामक स्थान में रहने के लिए निमंत्रण दिया गया जहाँ पर वे अकाल से निपट सकें (45:1-15)। यूसुफ़ की योजना को पूरा करने के लिए फ़िरौन का पूरा पूरा सहयोग मिला, उसने आदेश दिया कि कनान में गाड़ियाँ भेजी जाएँ जो मिस्र के लिए घराने की यात्रा में सहायक हो (45:16-20)। इन गाड़ियों को वापस यात्रा के लिए पर्याप्त खाद्य पदार्थों से भर दिया गया जब भाई कनान पहुँचे और अपने पिता को समाचार दिया, पहले तो वह अचंभित हुआ फिर यूसुफ़ के द्वारा भेजी गई वस्तुओं को देखने के पश्चात, याक़ूब को विश्वास हुआ कि उसका पुत्र सचमुच में जीवित था। उसने मिस्र जाने और अपने मृत्यु से पहले लम्बे समय से बिछड़े अपने पुत्र को देखने का सफल निर्णय लिया (45:21-28)।

अपने भाइयों का सामने यूसुफ़ का स्वयं को प्रगट करना (45:1-15)

[1]तब यूसुफ़ उन सब के सामने जो उसके आस-पास खड़े थे, अपने को और रोक न सका; और पुकार के कहा, "मेरे आस-पास से सब लोगों को बाहर कर दो।" भाइयों के सामने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ़ के संग और कोई न

रहा। [2]तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और फ़िरौन के घर के लोगों को भी इसका समाचार मिला। [3]तब यूसुफ़ अपने भाइयों से कहने लगा, "मैं यूसुफ़ हूँ, क्या मेरा पिता अब तक जीवित है?" इसका उत्तर उसके भाई न दे सके; क्योंकि वे उसके सामने घबरा गए थे। [4]फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मेरे निकट आओ।" यह सुनकर वे निकट गए। फिर उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ, जिसको तुम ने मिस्र आने वालों के हाथ बेच डाला था। [5]अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहाँ बेच डाला, इससे उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिए मुझे तुम्हारे आगे भेज दिया है। [6]क्योंकि अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है; और अब पाँच वर्ष और ऐसे ही होंगे कि उनमें न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा। [7]इसलिए परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। [8]इस रीति अब मुझ को यहाँ पर भेजने वाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा; और उसी ने मुझे फ़िरौन का पिता सा, और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है। [9]अतः शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो, 'तेरा पुत्र यूसुफ़ यह कहता है कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है; इसलिए तू मेरे पास बिना विलम्ब किए चला आ। [10]तेरा निवास गोशेन देश में होगा, और तू बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा। [11]और अकाल के जो पाँच वर्ष और होंगे, उनमें मैं वहीं तेरा पालन-पोषण करूँगा; ऐसा न हो कि तू और तेरा घराना, वरन् जितने तेरे हैं, वे भूखों मरें।' [12]और तुम अपनी आँखों से देखते हो, और मेरा भाई बिन्यामीन भी अपनी आँखों से देखता है कि जो हम से बातें कर रहा है वह यूसुफ़ है। [13]तुम मेरे सब वैभव का, जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है, उस सब का मेरे पिता से वर्णन करना; और तुरन्त मेरे पिता को यहाँ ले आना।" [14]तब वह अपने भाई बिन्यामीन के गले से लिपटकर रोया; और बिन्यामीन भी उसके गले से लिपटकर रोया। [15]वह अपने सब भाइयों को भी चूमकर रोया, और इसके पश्चात उसके भाई उससे बातें करने लगे।

आयत 1. यूसुफ़ ने सुना कि किस प्रकार यहूदा ने साहसिक और त्याग की भावनाओं को व्यक्त किया (44:18-34) जो बिन्यामीन और उनके पिता याकूब के लिए सच्चे प्रेम और चिंता को दिखाता है। वह अपने को और रोक न सका, यूसुफ़ ने उसके आस-पास खड़े लोगों से कहा कि **"मेरे आस-पास से सब लोगों को बाहर कर दो।"** इस प्रकार के आदेश प्राचीन मिस्र में प्रचलित था क्योंकि यह उनके संस्कृति की मांग थी कि जब उच्च अधिकारी अपने कार्यस्थल पर हों तब अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखें। इससे पहले दो बार, यूसुफ़ अपने भाइयों और सेवकों से अपने आँसू छिपाने के लिए दूर चला गया (42:24; 43:30)। **भाइयों के सामने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ़ के संग और कोई न रहे** इसलिए उसने सेवकों को बाहर जाने को कहा।

आयत 2. यद्यपि यूसुफ़ चाहता था कि इस घराने का पुनः मेल अनूठा और

व्यक्तिगत रूप से हो, परन्तु वह भावनाओं को रोक नहीं सका और दुःख और आनंद से भरकर **चिल्ला चिल्लाकर रोने** लगा और **मिस्रियों ने सुना, और फ़िरौन के घर के लोगों को भी इसका समाचार मिला** (देखें टिप्पणी 43:30)।

आयत 3. अपना ढाढस बांधते हुए, यूसुफ़ ने सीधा अपने भाइयों से बात की और स्वयं को उन पर प्रगट किया: **"मैं यूसुफ़ हूँ, क्या मेरा पिता अब तक जीवित है?"** इस समय तक, उसने "तुम्हारे पिता" (43:7, 27), कहकर पूछताछ की थी परन्तु अब "मेरा पिता" कहकर पूछने लगा। उसके भाइयों अपने कानों और अपनी आँखों पर भरोसा नहीं कर सके। **इसका उत्तर उसके भाई न दे सके; क्योंकि वे उसके सामने घबरा गए थे।** "घबरा गए थे" इस वाक्यांश को בָּהַל *(बहल)* शब्द से लिया गया है "जिसका प्रयोग सामान्यता किसी के भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है तब जब वह किसी अनचाही, घबरा देने वाली या संकट के घड़ी का सामना करता है।" यह किसी सेना या राष्ट्र का तनाव से होकर गुज़र रही परिस्थितिओं को व्यक्त करने के लिए कभी कभी सैनिक कार्यवाही के सन्दर्भ में देखा जा सकता है (निर्गमन 15:15; न्यायियों 20:41; 2 शमूएल 4:1; यिर्म. 51:32; यहेज. 7:27; दानिएल 11:44)।

आयत 4. उसके भाई उसे उत्तर दे न सके क्योंकि वे यूसुफ़ से बहुत घबराये हुए थे; इसलिए उसने उनसे फिर से कहा, उनसे विनती की, **"मेरे निकट आओ।"** जब वे **उसके निकट** गए, उसने फिर से अपनी पहचान बताई: **"मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ, जिसको तुम ने मिस्र आने वालों के हाथ बेच डाला था"** (देखें 37:28)। जो बातें उन्होंने बड़े लम्बे समय से छिपा रखी थी अंततः, उसका भेद उनके किए गए अपराध के साथ खुल गया।

आयत 5. परन्तु, यूसुफ़ ने शीघ्रता से उनसे कहा कि उनसे बदला लेने की उसकी कोई योजना नहीं थी उसने आग्रह किया कि**, "अब तुम लोग मत पछताओ, कि तुम ने जो मुझे यहाँ बेच डाला।"** यह एक महत्वपूर्ण बात थी। यूसुफ़ ने अपने भाइयों को परखा, परन्तु एक निम्न पद वाले मनुष्य ने उनपर भयंकर आरोप लगाया और उनके ऊपर बहुत से अपराध करने का बोझ डाल दिया जिसके कारण वे पूरी तरह से निराश हो गए। इस प्रकार की पहुँच यूसुफ़ और उसके भाइयों के बीच स्थाई रूप से मतभेद उत्पन्न कर सकता था; यह उनके घराने के मेलमिलाप असंभव बना सकता था। जबकि यूसुफ़ ने उनके पापों से अपना ध्यान हटाकर परमेश्वर के अनुग्रह से भरे योजना पर ध्यान केन्द्रित किया। उसने कहा कि **परमेश्वर** ने **प्राणों को बचाने के लिए** मुझे **भेजा** है। **परमेश्वर** ने उसे भेजा इस वाक्य का वर्णन तीन बार आया है (45:5, 7, 8)। यहाँ पर इसे संभवतः परमेश्वर के वाचा के लोग के साथ साथ वास्तविक रूप से मिस्रियों और उसके चारों ओर के देशों के लिए कहा गया था। उन सब का प्राण भूखमरी से बचाया जा सकेगा।

आयत 6. जिस प्रकार यूसुफ़ अपने बातों को कह रहा था, उसने बताया कि **अकाल** का प्रभाव अंत समय से अधिक उसके शुरूआती समय में था, जबकि अभी केवल **दो वर्ष** से **उस देश** में अकाल पड़ा हुआ था; परन्तु अब आने वाले और **पाँच**

वर्ष ऐसे ही होने वाले थे (41:29, 30)। उसने मिस्र और उसके चारों ओर के देशों की कृषि के बारे में बताया जो खाली और उजाड़ पड़ी रहेगी। निकट भविष्य में **उनमें न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा; सुखा का प्रभाव इतना अधिक होगा कि सभी प्रकार के कृषि उपज या उत्पादन की कमी आ जाएगी**।

आयत 7. इसलिए, यूसुफ़ ने जो कुछ कहा था उसमें एक और बात को जोड़ते हुआ फिर से उसे कहा: **"परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े।"** यूसुफ़ ने इस घटना को परमेश्वर की दृष्टि से देखा, मिस्र में यूसुफ़ की उपस्थिति का सबसे मुख्य कारण "जीवित बचे रहना" था (45:5) - सामान्य लोगों का जीवन नहीं, परन्तु वह जीवन "जो तुम्हारा है" भयंकर अकाल के मध्य में, उसने अब्राहम के वंश की आवश्यकताओं की पूर्ति की (देखें 15:13-16)। परमेश्वर ने "पृथ्वी पर जीवित [שְׁאֵרִית, *शे'एरित*] लोगों की" रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी, इसलिए उसने अब्राहम के साथ किए वाचा को पूरा किया।

आयत 8. यूसुफ़ ने बार बार कहा कि, **"इस रीति अब मुझ को यहाँ पर भेजनेवाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा"**; "भेजाशब्द" का प्रयोग "परमेश्वर" के साथ कर्ता के रूप में करना यह बताता है कि, यद्यपि यूसुफ़ के भाई उससे से जलते थे और उसे दास के रूप में बेचकर उससे छुटकारा पाना चाहते थे, परन्तु जीवन और छुटकारे के लिए एक यन्त्र के रूप में उसका प्रयोग करने का परमेश्वर का एक बड़ा उद्देश्य था।

उसे **फ़िरौन का पिता**[2] **सा** ठहराना एक ईश्वरीय योजना था। यह वाक्यांश बताता है कि वह राजा का बुद्धिमान और विश्वासयोग्य सलाहकार था, जैसे एक पिता को अपने घर में होना चाहिए। आगे चलकर परमेश्वर ने यूसुफ़ को **उसके** [फ़िरौन के] **सारे घर का स्वामी ठहराया**। जिस प्रकार एक राजा के बाद कोई दूसरा सबसे बड़ा अधिकारी होता था, सारे राज्य के मामलों और भण्डार गृह के खर्चों के सारे लेनदेन का नियंत्रण उसी के हाथों में था (देखें 41:40-44, 55)। यूसुफ़ स्वयं को मिस्र देश का स्वामी ठहराया; जो भी आज्ञा वह देता था, **सभी राजकीय अधिकोरियों और मिस्र वासियों को शीघ्रता और आज्ञाकारिता से उसके आदेशों का पालन करना होता था**।

आयत 9. अपने पिता को देखने के लिए यूसुफ़ अति उत्सुक था उसका पहला प्रश्न कि "क्या मेरा पिता अब तक जीवित है?" 45:3 में था। इस समय तक, वह अपने भाईओं से कह चुका था कि **शीघ्र** [उसके] **पिता के पास जाओ**। उन्हें याक़ूब से कहना था कि, **"तेरा पुत्र यूसुफ़ यह कहता है,"** उन्हें याक़ूब को अवश्य ही स्पष्ट रूप से यह बताना था कि उसका पुत्र यूसुफ़, जिसके बारे में वह सोचता कि वह मर गया, वह अभी भी जीवित है। तब उन्हें ये सारी बातें यूसुफ़ की ओर से कहनी थी: **"कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है; इसलिए तू मेरे पास बिना विलम्ब किए चला आ।"**

आयत 10. कई प्रकार के प्रश्न इस बूढ़े पिता के मन में अपने आप उठने लगा

होगा, और अपने पूरे कुटुंब को मिस्र जैसे अनजान देश में ले जाते हुए उसे बड़ा संकोच हुआ होगा। यूसुफ़ सोचता रहा कि याक़ूब के मन में इस प्रकार के प्रश्न उठ रहे होंगे: "हम कहाँ रहेंगे?"; "कैसे हम अपने घराने के हरेक और अपने आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओ की पूर्ति करने में सक्षम हो पाएँगे?" इसलिए यूसुफ़ ने अपने भाईओं को चिता दिया कि अपने पिता से कहें कि सारे घराने के लिए सभी आवश्यक सामग्री का प्रबंध कर दिया गया है: **"तेरा निवास गोशेन देश में होगा।"** यूसुफ़ ने प्रोत्साहन देते हुए कहा: **"और तू बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा।"** मिस्र में "गोशेन की भूमि," जहाँ याक़ूब और उसके पूरे घराने को बसना था, उस स्थान के बारे में सही जानकारी अनिश्चित है। एक स्थान जो "गोशेन" कहलाता था उसका विवरण यहोशू में मिलता है (यहोशू 10:41; 11:16; 15:51); परन्तु हो सकता है कि इस्रएलियों ने यह नाम मिस्र से अपने साथ लाया हो और कनान में उस स्थान को यह नाम दे दिया हो जहाँ पर वे बस गए। बहुत से विद्वान् मानते हैं कि मिस्र का गोशेन पूर्वी डेल्टा में, वादी तुमिलत के पास पाया जाता था। इसकी समानता बाद के विवरण 47:11 में मिलता है जिसमें यूसुफ़ ने अपने घराने को "रामसेस की भूमि"[3] पर बसा दिया। स्पष्ट है कि "यह स्थान कृषि के लिए अधिक उपयुक्त नहीं था परन्तु पशुओं के चरने के लिए एक हरा भरा मैदान था, जिससे पता चलता है कि क्यों यूसुफ़ अपने पिता के घराने को वहाँ बसाना चाहता था"[4] (देखें 46:31-47:6)।

आयत 11. यूसुफ़ समझ गया कि उसके पिता का बुढ़ापा मिस्र की उसकी यात्रा में उसके लिए चिंताजनक हो सकता था। पूरे घराने के साथ चलना - स्त्रियों और छोटे छोटे बच्चों के साथ, और अपने जानवरों के साथ - मिस्र को जाना बहुत ही कठिन यात्रा रही होगी। यद्यपि, यूसुफ़ जानता था कि उनके लिए इस प्रकार चलते रहना ज़रूरी है ताकि वे चारों ओर फैले भयंकर सूखे का सामना कर सकें। उसने एक दृढ़ प्रतिज्ञा की कुछ वर्षों का अकाल चुनौती बन के आया है: **"और अकाल के जो पाँच वर्ष और होंगे, उनमें मैं वहीं तेरा पालन-पोषण करूँगा; ऐसा न हो कि तू और तेरा घराना, वरन् जितने तेरे हैं, वे भूखों मरें।"**

आयत 12. संकट की इस घड़ी में ,यूसुफ़ ने बताया कि उसके भाई न केवल उसके संदेशवाहक़ का काम करें बल्कि उसके साक्षी भी बने, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने आँखों से देखा था कि वह जीवित था। इसके साथ केवल **बिन्यामीन** ही उसका सगा **भाई** था, जो अपने पिता के सामने साक्षी देगा कि यूसुफ़ जीवित था। यदि याक़ूब ने दूसरों की बातों पर विश्वास नहीं किया, तो भी वह अपने सबसे छोटे बेटे की बातों पर विश्वास ज़रूर करेगा।

यूसुफ़ ने यह बात कही कि यह उसका **मुख** था जो उनसे **बात** कर रहा था। पिछली बातचीत में, जब वह अपने भाइयों से बात कर रहा था तब उसने अपने अनुवादक का सहारा लिया था (42:23)। परन्तु, इस समय यूसुफ़ ने सीधे सीधे उनसे उनकी अपनी भाषा (इब्रानी) में बात की ताकि वे लोग जान लें कि उनसे उनका स्वयं का भाई ही बात कर रहा है।[5]

आयत 13. इसके पश्चात, यूसुफ़ ने अपने भाइयों को अपनी अंतिम बात बताई: **तुम मेरे सब वैभव का, जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है, उन सब का मेरे पिता से वर्णन करना"** - धन और अधिकार उसने प्राप्त कर लिया है। यूसुफ़ ने अपने भाइयों से आग्रह किया कि वे उन सबका जो उन्होंने अपने स्वयं की आँखों से देखा था उसका पूरा विवरण अपने पिता को दें।

यूसुफ़ ने फिर कहा, **"और तुरन्त मेरे पिता को यहाँ ले आना।"** वह अपने पिता को देखने के लिए बहुत उत्सुक था और उसके जीवन का पालन पोषण करना चाहता था। क्रिया "ले ... आना" יָרַד *(यरद)* को 42:38 से आगे दोहराया गया है। जहाँ पर याक़ूब के बारे में बताया गया है कि, यदि बिन्यामीन को मिस्र ले आया गया *(यरद)* और वापस नहीं भेजा गया, तो उसे दुःख के साथ शिओल ले जाया *(यरद)* जाएगा। इसके बावजूद यूसुफ़ चाहता था कि उसका पिता मिस्र में ले आया जाए और आनंद से जीवन बिताए।[6]

आयत 14. इस मिलन के अंत में, यूसुफ़ **अपने भाई बिन्यामीन के गले से लिपटकर रोया बिन्यामीन** भी अपने भाई के इस प्रेम को देखकर उसके गले से लिपटकर रोया।

आयत 15. फिर यूसुफ़ **अपने सब भाइयों को भी चूमकर रोया**, परन्तु वचन उसके बड़े भाइयों का उसके साथ लिपटकर रोने के बारे में नहीं बताता, उनको उस पर संदेह था। जबकि ,ऐसा मानते हैं कि **इसके पश्चात उसके भाई उससे बातें करने लगे**। इसका तात्पर्य बिन्यामीन को छोड़कर उसके भाई यूसुफ़ के अनुग्रह की दृष्टि को सही मानने को तैयार नहीं थे। उनका यह डर उनके पिता कि मृत्यु के समय तक देखा जा सकता है, जब वे डर गए कि अब यूसुफ़ अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करेगा और उनसे बदला लेगा (50:15-18)।

फ़िरौन का घराने के लिए मिस्र में आने का निमंत्रण (45:16-20)

[16]इस बात का समाचार, कि यूसुफ़ के भाई आए हैं, फ़िरौन के भवन तक पहुँच गया, और इससे फ़िरौन और उसके कर्मचारी प्रसन्न हुए। [17]इसलिये फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, "अपने भाइयों से कह कि एक काम करो: अपने पशुओं को लादकर कनान देश में चले जाओ। [18]और अपने पिता और अपने अपने घर के लोगों को लेकर मेरे पास आओ; और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम्हें दूँगा, और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे। [19]और तुझे आज्ञा मिली है, 'तुम एक काम करो कि मिस्र देश से अपने बाल-बच्चों और स्त्रियों के लिये गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने पिता को ले आओ। [20]और अपनी सामग्री का मोह न करना क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह तुम्हारा है'।"

आयतें 16-18. यूसुफ़ ने अपने भाइयों को कनान लौटने और अपने पिता को मिस्र में उसकी धन-सम्पत्ति तथा अधिकार के पद के बारे बताने का निर्देश दिया

था। वह चाहता था कि वे उसके पिता को और पूरे घराने को मिस्र में आकर बसने और उसके निकट रहने के लिए राज़ी करें ताकि वह अकाल के बचे हुए समय में उनकी पूर्ति कर सके।

जब **फ़िरौन** ने **यूसुफ़ के भाइयों** के आगमन का **समाचार** सुना, तो वह और **उसके कर्मचारी** दोनों बहुत **प्रसन्न हुए** (45:16)। इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा कि वह अपने भाइयों को अपने पशुओं को भोजन सामग्री लादकर वापस कनान देश जाएँ और अपने पिता और पूरे घराने के साथ वापस मिस्र लौट आएं (45:17)। इस तरह, फ़िरौन ने अपने सहयोगी के निमंत्रण पर मुहर लगा दी। उसने यूसुफ़ से आग्रह किया कि अपने भाइयों को **अपने पिता** और **अपने सम्पूर्ण घराने** के साथ उसके **पास आने** की आज्ञा दे (45:18)। आगे, फ़िरौन ने उन्हें **मिस्र देश का उत्तम**[7] **देने** की प्रतिज्ञा की, जहाँ उन्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे। "देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ" की अभिव्यक्ति का यह अर्थ नहीं था कि उन्हें मिस्र की सबसे उत्तम भूमि प्राप्त होगी; बल्कि यह कि इसका अर्थ यह था कि वे देश की सबसे उत्तम उपज को खा पाएँगे।

आयतें 19, 20. क्योंकि फ़िरौन यह जानता था कि हो सकता है इस प्रकार के उदार प्रस्ताव वास्तविक न लगें, इसलिए उसने यूसुफ़ से अपने भाइयों के साथ सख्त होने को कहा और उन्हें उसने राजाज्ञा दी। **"मिस्र देश से अपने बालबच्चों और स्त्रियों के लिए गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने पिता को ले आओ।"** (45:19)। इसके अतिरिक्त, यूसुफ़ को यह भी कहना था, **"अपनी सामग्री का मोह न करना क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह तुम्हारा है"** (45:20)। आयत 18 के समान वह उनको मिस्र देश की उत्तम भौतिक वस्तुओं को देने की प्रतिज्ञा कर रहा है।

कुछ लोगों ने यूसुफ़ के भाइयों और उसके परिवार के बाकी सदस्यों से सम्बन्धित फ़िरौन की उदारता पर सवाल उठाए क्योंकि यह परम्परागत मिस्री विदेशियों से कोई लगाव नहीं रखते थे। परन्तु राजा सात वर्ष बहुतायत और फिर सात वर्ष अकाल की उस इब्रानी भविष्यवाणी का कर्ज़दार था। यह यूसुफ़ द्वारा मिस्र में बहुतायत के समय किए गए समझदारी के प्रबन्धन से ही था कि मिस्र इतने भयंकर अकाल का सामना कर सका। आगे, फ़िरौन जिस तरह अपने देश की उपज का फल आस-पास के देशों में उदारता से बाँट रहा था उसका निश्चय ही सकारात्मक प्रभाव परदेशियों पर पड़ा। इस कार्य ने निश्चय ही बहुत से परदेशियों के मनों को जीता, और वे अब फ़िरौन और वहां के लोगों को अब भले दृष्टिकोण से देखने लगे: मिस्र अब प्राचीन विश्व के परोपकारी "खाद्य भंडार" के रूप में जाना जाने लगा।[8]

यूसुफ़ द्वारा भोजन-सामग्री देना और उसके भाइयों का याकूब के पास लौटना (45:21-28)

[21]इस्राएल के पुत्रों ने वैसा ही किया; और यूसुफ़ ने फ़िरौन की आज्ञा के

अनुसार उन्हें गाड़ियाँ दीं, और मार्ग के लिए भोजन-सामग्री भी दी। 22उनमें से एक-एक जन को उसने एक एक जोड़ा वस्त्र भी दिया; और बिन्यामीन को तीन सौ रूपे के टुकड़े और पाँच जोड़े वस्त्र दिए। 23अपने पिता के पास उसने जो भेजा वह यह है, अर्थात् मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे, और अन्न और रोटी और उसके पिता के मार्ग के लिए भोजनवस्तु से लदी हुई दस गदहियाँ। 24तब उसने अपने भाइयों को विदा किया, और वे चल दिए; और उसने उनसे कहा, "मार्ग में कहीं झगड़ा न करना।" 25मिस्र से चलकर वे कनान देश में अपने पिता याक़ूब के पास पहुँचे। 26और उससे यह कहा, "यूसुफ़ अब तक जीवित है, और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है।" पर उस ने उनकी प्रतीति न की और वह अपने आपे में न रहा। 27तब उन्होंने अपने पिता याक़ूब से यूसुफ़ की सारी बातें, जो उसने उनसे कही थीं कह दीं। जब उसने उन गाड़ियों को देखा, जो यूसुफ़ ने उसके ले आने के लिए भेजीं थीं, तब उसका चित्त स्थिर हो गया। 28और इस्राएल ने कहा, "बस, मेरा पुत्र यूसुफ़ अब तक जीवित है; मैं अपनी मृत्यु से पहले जाकर उसको देखूँगा।"

आयत 21. इस्राएल [याकूब] **के पुत्रों** ने वैसा ही किया जैसा यूसुफ़ ने उनसे करने को कहा। यूसुफ़ ने उन्हें **गाड़ियाँ** दीं (**फ़िरौन** की आज्ञा के अनुसार) और कनान की **यात्रा के लिए भर भर के भोजन-सामग्री** भी दी।

आयत 22. फ़िरौन के निर्देश से परे जाकर, यूसुफ़ ने अपनी क्षमा करने की भावना का प्रमाण देते हुए उन्हें और कई उपहार भी दिया: **"उनमें से एक-एक जन को उसने एक एक जोड़ा वस्त्र भी दिया।"** ये वस्त्र बहुत ही महंगे थे सामान्यतः चरवाहे जिसको खरीदने और पहनने में सक्षम नहीं होंगे। अवश्य ही, इस बात में वह विडंबना देख सकते थे: एक महंगा अंगरखा याकूब द्वारा यूसुफ़ को दिए जाने ने उसके विरुद्ध उसके भाइयों के क्रोध को और अधिक बढ़ाया और वे उसे "चाँदी के बीस टुकड़ों" में बेचने के लिए तैयार हो गए (37:28)।

ठीक उसी प्रकार यूसुफ़ ने जेवनार में उसके बड़े भाइयों की अपेक्षा **बिन्यामीन** को "पाँच गुणा अधिक" भोजन-वस्तु दी (43:34), और अब **उसने** अपने सबसे छोटे भाई को **तीन सौ रूपे के टुकड़े और पाँच जोड़े वस्त्र दिए**। मिस्र में एक शक्तिशाली शासक के रूप में, यूसुफ़ के पास अधिकार था कि वह पहिलौठे के अधिकार (या "जेठे का अधिकार") को महत्व की बात न समझे और बड़ों की अपेक्षा सबसे छोटे को विशेष आशीष दे; और उसने ऐसा ही करने की ठानी[9] वह अपने सगे भाई को देखकर बहुत प्रसन्न और उसे भला चंगा जानकर बहुत धन्यवादी था।

दो घटनाओं ने, यूसुफ़ की सोच बदल दी, जिन भाइयों ने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया था अब बदल चुके थे। पहली घटना, जिस भाई के बोरे में चाँदी का कटोरा मिला उसके साथ सभी दण्ड भोगने को तैयार थे (44:9), और जिसके पास कटोरा मिला वह बिन्यामीन था (44:12, 16)। दूसरी घटना, यहूदा जिसने दूसरे भाइयों को यूसुफ़ को बंधुआई में बेचने के लिए उकसाया, अब

दास बनने के लिए अपना जीवन देने को तैयार था; यदि बिन्यामीन को उसके भाइयों के साथ घर जाने और उसके पिता के साथ रहने की अनुमति मिले (44:32-34)। ये सारी बातें इंगित करती थी कि उन भाइयों ने दर्द का एक पाठ सीख लिया था कि अपने भाई के प्रति जलन और उसके विरुद्ध दुर्व्यवहार करना कितना विनाशकारी हो सकता है; इसलिए यूसुफ़ ने उनके लिए अपने अनुग्रह, क्षमा और आशीष की बहुतायत को बनाये रखा।

आयत 23. अंततः, यूसुफ़ ने **अपने पिता** के लिए उपहार भेजा उसने याकूब को आवश्यक वस्तुओं से भरी गाड़ियाँ भेजी, अर्थात् **मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे थे**। इसके साथ उसने जो भेजा वह यह है, **अन्न और रोटी और उसके पिता के मिस्र को आने मार्ग के लिए भोजन वस्तु से लदी हुई दस गदहियाँ**। अन्न और भोजन-सामग्री मिस्र की छवि को बहुतायत का देश और अधिक प्रभावशाली देश बना दिया। इन सारी बातों से याकूब सहमत था कि उसका वर्षों पुराना खोया पुत्र अब मिस्र का अधिकारी था, वह सचमुच उसके और उसके पूरे घराने की पूर्ति कर सकता था - न केवल उनके मार्ग में परन्तु तब भी जब वे गोशेन पहुँच चुके हों।

आयत 24. अपने भाइयों के कनान की वापसी के लिए भोजन वस्तुओं का प्रबंध करने के पश्चात, जब **यूसुफ़ ने उनको** विदा किया, फिर जैसे ही वे जाने लगे, उसने उन्हें अंतिम बार चिताया कि: **"मार्ग में कहीं झगड़ा न करना।"** वह अपने भाइयों के बारे में भली-भाँति जानता था कि जैसे ही वे इस स्थान से दूर जाते हैं यूसुफ़ की बंधुवाई को लेकर उनके बीच झगड़ा हो सकता था और एक दूसरे पर दोष मढ़ने की बात आ सकती थी। सच तो यह है कि यूसुफ़ पहले भी इस प्रकार के व्यवहार का अनुभव कर चुका था जब उसने स्वयं को उनके सामने प्रगट किया था (42:22) और वह नहीं चाहता था कि "यूसुफ़ के अभी तक जीवित होने" के समाचार से उसके पिता के आनंद को उसके भाई व्यर्थ कर दें (45:26)।

यूसुफ़ का अपने भाइयों को चिताने का दूसरा कारण था कि यूसुफ़ का मिस्र में जीवित होने के बारे में उनके पिता को बताया जाए, उन्हें उसके प्रिय पुत्र के लगातार दो दशकों से गायब रहने की वजह पर उससे क्षमा माँगनी चाहिए। उसके भाई डर गए कि यूसुफ़ उनसे द्वेष रखेगा और बाद में उनसे बदला लेगा। वह उन्हें पहले ही क्षमा कर चुका था (45:1-8), पर क्षमा कर दिया जाना, क्षमा प्राप्त किए जाने के अनुभव के समान नहीं है। सचमुच उनके पास स्वयं को क्षमा करने का कठिन समय था और वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि यूसुफ़ उन्हें क्षमा करने में सच्चा था। कई वर्षों के बीतने पर (देखें 47:9, 28) जब उनका पिता मर गया, तब भी उसके भाई डरे हुए थे कि उनका भाई यूसुफ़ उसे बंधुआई में बेचे जाने पर उनसे बदला लेगा (50:15-21)।

आयतें 25, 26. यूसुफ़ की कही बातों को ध्यान में रखते हुए, **मिस्र से चलकर** वे **कनान देश में अपने पिता याकूब के पास पहुँचे**। और उससे यह कहा, **"यूसुफ़ अब तक जीवित है, और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है।"** कैसे

यूसुफ़ मिस्र में आया या बहुत वर्षों पहले वास्तव में हुआ क्या था जैसे याकूब के प्रश्नों के बारे में लेखक ने कुछ भी वर्णन नहीं किया है। याकूब के भूलने का कारण हो सकता है कि एक बूढ़ा मनुष्य इतने आनंद से भर गया कि उसे इन प्रश्नों को पूछने का ध्यान ही नहीं रहा या उस समय उनसे कुछ पूछने के विषय में सोचा ही नहीं। याकूब के लिए यूसुफ़ के जीवित होने की सूचना को स्वीकार करना बहुत कठिन बात थी, परन्तु उसके मिस्र का प्रभु होने का कथन उसके लिए प्रतीति करने योग्य बात थी ही नहीं जो याकूब को अचम्भे में डाल दिया। अध्याय 37 में, याकूब ने अपने पुत्रों के विश्वासघात की प्रतीति की; परन्तु अब, जब उन्होंने यूसुफ़ के जीवित होने की सच्चाई उसे बताई, तो उसने उनकी प्रतीति नहीं की।

आयत 27. यूसुफ़ के जीवित होने की सच्चाई का अपने पिता को विश्वास दिलाने के प्रयत्न में, भाइयों का उसके साथ लम्बी चर्चा चली, जिसमें **उन्होंने यूसुफ़ की सारी बातें, जो उसने उनसे कही थीं कह दीं**। क्योंकि याकूब जानता था कि उनके पुत्रों का इतिहास झूठा था (34:7-31), वह बड़ी उलझन में था, परन्तु, जब उसने उन गाड़ियों को देखा, जो यूसुफ़ ने उसे लाने के लिए भेजीं थीं, तब जाकर उसने प्रतीति की। बीस गदहों से लदी गाड़ियाँ, अन्न, महंगे वस्त्र और तीन सौ चाँदी के टुकड़े देकर (45:21-23) - एक धनी और परोपकारी मनुष्य ने अपने भाइयों के साथ संपर्क में आने पर उनके लिए उच्च सेवा प्रदान की। इन वस्तुओं से भाइयों की अनोखी कहानी का पता चला कि यूसुफ़ जीवित था और मिस्र पर प्रभुता करता था। इस समाचार के परिणामस्वरूप उनके पिता याकूब का चित्त स्थिर हो गया। बीस वर्ष पहले, जब उसे यूसुफ़ के मरने की प्रतीति कराई गई थी, तब याकूब गहरे शोक में डूब गया था और "उसको शांति नहीं मिली" (37:34, 35)। परन्तु अब, वह बड़ा बोझ उसके सिर से उतर चुका था।

आयत 28. इस नई आशा के साथ **इस्राएल** ने कहा, **"बस, मेरा पुत्र यूसुफ़ अब तक जीवित है; मैं अपनी मृत्यु से पहले जाकर उसको देखूँगा।"** यहाँ पर याकूब को "इस्राएल" कहना बिल्कुल उचित था क्योंकि यह नया नाम, उसे परमेश्वर के दूतों के द्वारा दिया गया था (32:28-30), जो उसके और उसके घराने के लिए नई आशा और भविष्य को लेकर आया था। अब्राहम के ये वंश अनजान देश मिस्र के प्रवेश द्वार पर खड़े थे, और उस देश में बस जाने का उनका निर्णय इस्राएल के इतिहास को बदलने जा रहा था।

अनुप्रयोग

पुन: मेल-मिलाप कराने का परमेश्वर का कार्य (45:1-15)

क्योंकि हम पतित संसार में रहते हैं, इसलिए दूसरों के साथ हमारे संबंध हमेशा सिद्धता से परे रहता है। घमंड, ईर्ष्या और विश्वासघात जैसे पाप दो लोगों के बीच फूट उत्पन्न करा सकता है। 45:1-15 में यूसुफ़ का उसके भाइयों को क्षमा करने से उनके टूटे रिश्तों को जुड़ते हुए देखा जा सकता है - जिससे पुन: मेल-

मिलाप संभव है।

तरस पुन: मेल-मिलाप की प्रक्रिया का पहला चरण है। अध्याय 45 के पहले आधे भाग में यूसुफ़ का उसके भाइयों के साथ बातचीत के विषय में बताया गया है। याकूब के पुत्रों के लिए यह एक हिला देने वाला क्षण था और व्यक्तिगत रूप से यूसुफ़ के लिए भावुक होने का समय था। उसे मालूम था कि जैसे ही वह स्वयं को अपने भाइयों के सामने प्रगट करता है उसके आँसू अपने आप बहने लग जाएंगे (43:30), परन्तु वह यह भी जानता था घर के नौकर सोचेंगे कि एक शक्तिशाली मिस्री शासक के लिए इस तरह का व्यवहार उचित नहीं होगा। इसलिए, उसने उन सबको वहाँ से जाने का निर्देश दिया ताकि वह अपने भाइयों के संग गुप्त में बातें कर सके। यूसुफ़ का संवेदनशील उत्तर बहुत प्रबल था इसलिए वह अपने को बिल्कुल रोक न सका। वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और फ़िरौन के घर के लोगों को भी इसका समाचार मिला (45:2)।

अचानक ही, भावनाओं में बहकर, अपने भाइयों से कहने लगा, "मैं यूसुफ़ हूँ, क्या मेरा पिता अब तक जीवित है?" यह सुनकर उसके भाई चकित हो गए (45:3)। इन शब्दों ने उसके भाइयों को ऐसे अचंभित किया कि वे निःशब्द हो गए और उसका उत्तर न दे सके। वे केवल अचंभित ही नहीं थे बल्कि इस मिस्री के सामने और उसके उद्घोषणा से घबरा गए थे (45:3)। कई संदेहास्पद विचार उनके मन में दौड़ने लगे होंगे: "कैसे यह मनुष्य हमारे वर्षों पुराने खोए भाई का नाम जान सकता है? क्यों यह किसी व्यक्ति के होने का दावा करेगा जो वास्तव में अब मर चुका है? यदि यह सचमुच यूसुफ़ है, तो यह क्यों हमसे इस प्रकार का व्यवहार कर रहा है? क्या यह अपने मज़े के लिए भारी दण्ड देकर हमें सता रहा है?"

यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसे मिस्री शासक को नहीं पाया जो उनकी ओर क्रोध से भरे दृष्टि से घूर रहा था, उनपर दोष लगाने और दण्ड देने की इच्छा रखता था। बल्कि, उन्होंने एक दयावंत मनुष्य को देखा जो तरस के साथ आँसू बहा रहा था और स्वयं को उनका भाई यूसुफ़ बता रहा था। परमेश्वर ऐसा न्यायी नहीं है जो पापियों को दण्ड देने में आनंद मनाता है। वह पापियों से इतना प्रेम करता है कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि वह क्रूस पर अपनी जान दे और "वे नाश न हों परन्तु अनंत जीवन पाएँ" (यूहन्ना 3:16)। यीशु ने स्वयं यरूशलेम में अपने खोए हुए लोगों पर तरस खाकर आँसू बहाया (मत्ती 23:37, 38)।

क्षमा पुन: मेल-मिलाप का साधन बनता है। यूसुफ़ के कोमल शब्द और तरस के आँसू ने उसके भाइयों के साथ मेल-मिलाप के संभावना को उजागर कर दिया। उसने दिखा दिया कि उसके मन में उन्हें दण्ड देने की कोई बुरी इच्छा नहीं है। इसके विपरीत; यूसुफ़ ने उन्हें निकट आने का निमंत्रण दिया ताकि वे अच्छे से देख सके कि वही उनका वास्तविक भाई था जिसे उन्होंने बन्धुवाई में बेच डाला था (45:4)। उसके साथ बुरे व्यवहार के बारे में सब कुछ भुलाकर वह उन्हें क्षमा कर चुका था, विशेषकर उस समय जब उसने परमेश्वर के कार्यों को उसके लोगों

के जीवन में होने की कहानी को प्रस्तुत किया। यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहाँ बेच डाला, इससे उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिए मुझे तुम्हारे आगे भेज दिया है" (45:5)।

फिर उसने उन्हें सूचना दी कि जिस अकाल ने देश को दो वर्षों से प्रभावित किया हुआ था वह और पाँच वर्षों तक ऐसा ही रहेगा। क्योंकि सूखे के कारण लोग फसलों का उत्पादन नहीं कर पाएंगे (45:6)। उन्हें सम्मति देते हुए, उसने क्षमा की भावना व्यक्त करते हुए कहा, "परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े" (45:7)। उसने कहा, "मुझसे पीछा छुड़ाने की तो तुम्हारी योजना थी, परन्तु परमेश्वर की योजना तुम्हारे किए व्यवहारों का उपयोग एक माध्यम के रूप में कर हमारे घराने को बचाने के लिए था।" यूसुफ़ ने सुनिश्चित किया कि उसके भाई पछतावा, अपराध बोध या बदला लिए जाने के डर में न जीयें। उसने बार-बार परमेश्वर के अनुग्रह की महान योजना के विचार को उनके अपने छोटे भाई होने के कष्ट से बचने के लिए उससे पीछा छुड़ाने की योजना से ऊपर बताया। तीसरी बार, परन्तु भिन्न तरीके से, यूसुफ़ ने कहा मनुष्य की योजना का बार-बार प्रयोग परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करता है। "इस रीति अब मुझ को यहाँ पर भेजने वाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा; और उसी ने मुझे फ़िरौन का पिता सा, और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है" (45:8)।

इस प्रकार, "यूसुफ़ की कहानी की सारी घटनाएँ दर्शाती हैं कि कैसे परमेश्वर के उद्देश्य अंततः पूरा होने में इनका योगदान होता है, मनुष्यों के कार्यों के बावजूद भी, चाहे वे कार्य नैतिक रूप से सही हो या नहीं।"[10] कहना यह नहीं है कि मनुष्य "बुराई न करें कि भलाई निकले" (रोमियों 3:8), परन्तु परमेश्वर इस योग्य है कि मनुष्य के सारे मामलों पर राज्य कर सकता है। यूसुफ़ के मामले में, परमेश्वर बुराई के बदले भलाई को लाने के योग्य था और उसने उसका प्रयोग अपनी महान योजना को पूरा करने के लिए किया: उसके घराने के प्राणों की रक्षा की, जो अब्राहम के वंश थे (45:5-9)। उसी समय में यह चारों ओर के देशों के लोगों के जीवन में छुटकारा लाया (41:55-57)। इसके पीछे मुख्य उद्देश्य है कि एक आत्मिक मनुष्य को बुरे और अच्छे दोनों परिस्थितियों के मध्य अपने जीवन को परमेश्वर के हाथ में दे देना चाहिए, भरोसा करना चाहिए कि वह इसके योग्य है कि जो उससे प्रेम करते हैं उनके लिए सारी बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं (रोमियों 8:28)। इस प्रकार का स्वभाव, जो हमें हानि पहुंचाते हैं, उन लोगों के विरुद्ध ईर्ष्या या बदला लेने के लिए रोकता है। जब यूसुफ़ ने उदारतापूर्वक उसके भाइयों को क्षमा किया, उसने उनके लिए शांति और मेल-मिलाप का मार्ग खोल दिया।

क्षमा अलग हुए लोगों को एक करता और मेल-मिलाप कराता है। इस घराने ने बहुत वर्षों से अच्छे रिश्तों का आनंद नहीं उठाया था। यूसुफ़ अपने भाइयों से

अलग हो गया था क्योंकि उन्होंने उसे व्यापारियों के हाथ बेच दिया था जो उन्हें मिस्र ले आये। यद्यपि कनान में याकूब अपने पुत्रों के बहुत निकट था, परन्तु वह उनसे कुछ सीमा तक दूर ही था। अवश्य है कि, वह हमेशा उन्हें यूसुफ़ की मृत्यु का ज़िम्मेदार मानता रहा और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनका हाथ इसमें होने का संदेह करता रहा। इसलिए, जब वे और अधिक भोजन सामग्री के लिए वापस मिस्र जाना चाहते थे और अपने साथ बिन्यामीन को साथ ले जाना चाहते थे तो, उनके पिता ने कहा, "मुझको तुमने निर्वंश कर दिया, देखो यूसुफ़ नहीं रहा, और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो; ये सब विपत्तियाँ मेरे ऊपर आ पड़ी हैं" (42:36)। याकूब के कथन से समझ आता है कि वह अपने पुत्रों को झूठा समझता था और उन पर किसी प्रकार का भरोसा नहीं करता था।

एक मन और मेल-मिलाप लाने के लिए, यूसुफ़ ने पूरे घराने के लिए कही हुई बात को विराम दिया। उसने अपने भाइयों से विनती की कि वे शीघ्रता करें और अपने पिता याकूब के पास घर को लौट जाएँ।

> उसके पास जाकर उन्हें कहना था, "तेरा पुत्र यूसुफ़ यह कहता है कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है; इसलिए तू मेरे पास बिना विलम्ब किए चला आ। तेरा निवास गोशेन देश में होगा, और तू बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा" (45:9, 10)।

यूसुफ़ ने फिर वायदा किया कि अकाल के जो पाँच वर्ष और होंगे, उनमें उनकी भरपूरी से पूर्ति करेगा, ताकि वे भूखों न मरें (45:11)।

उसके भाइयों के द्वारा सन्देश दिए जाने के कारण यूसुफ़ ने अपने पिता को सूचना दी कि परमेश्वर उसे आशीष दे चुका था और "सारे मिस्र का प्रभु" ठहराया था। यूसुफ़ उस पर अपना प्रभाव डालना चाहता था कि यह एक ईश्वरीय बुलाहट थी जो अब्राहम के मेसोपोटामिया में प्राप्त करने के समान था: परमेश्वर ने उससे कहा सब कुछ छोड़कर कनान देश में चला जा जहाँ पर वह उसे बहुतायत की आशीष देगा (12:1-5)। यह बुलाहट, परमेश्वर से याकूब को मिली आज्ञा और प्रतिज्ञा से बिल्कुल अलग नहीं थी जब वह अपने भाई एसाव के क्रोध से भागा जाता था (28:10-17)। परमेश्वर की आज्ञा का अवहेलना या विरोध नहीं किया जाना था; बल्कि यह जीवित बचे घराने की रक्षा और उनके बीच का मेल-मिलाप था।

यूसुफ़ का सन्देश अपने पिता को देना इन भाइयों के लिए बहुत कठिन काम रहा होगा। यूसुफ़ के जीवित होने के शुभ समाचार के साथ उन्हें याकूब को बुरा समाचार भी देना होगा कि कैसे उन्होंने उसे दासत्व में बेच दिया था। कठोर हृदय और क्रूरता से अपने पिता से कई वर्षों से विश्वासघात करने के पश्चात उन्हें अपने पापों को मानना होगा ताकि उनके घराने में सच्ची चंगाई आ सके। परन्तु, सच्ची चंगाई और मेल-मिलाप संभव नहीं है, जब तक वे यह न मान लें कि वह

परमेश्वर ही था जिसने यूसुफ़ की बंधुआई को कष्ट से आशीष में बदल दिया। फ़िरौन के लिए उसकी सेवा केवल याकूब के घराने को ही आशीष नहीं देगा, परन्तु दूसरे लोगों को भी करेगा जो पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में रहते थे।

कहानी के इस भाग के अंत में यूसुफ़ और उसके भाइयों के बीच लेखक ने छू जाने वाली घटना विशेषकर बिन्यामीन के साथ हुए पुन: मेल को बताया। वचन नहीं बताता कि राहेल का यह छोटा बेटा कितने वर्ष का था जब उसके भाई को मिस्र ले जाया गया। वह यूसुफ़ के इब्रानी शब्दों और चेहरे पहचान पाने के योग्य था, जैसे कि उसके बड़े भाइयों ने भी पहचाना जबकि उसने एक मिस्री होने को दिखावा किया था। एक लम्बे समय तक एक दूसरे से दूर रहने के पश्चात, उनके पुन: मिलन का यह एक भावनात्मक दृश्य था; जिस रीति से यूसुफ़ बिन्यामीन के गले लग कर रोने लगा और बिन्यामीन भी यूसुफ़ के गले से लिपट कर रोने लगा (45:14)। फिर यूसुफ़ ने सारे भाइयों को चूमा और उनके लिए रोया। क्योंकि वृत्तान्त भाइयों की ओर से किसी प्रकार का कोई पश्चाताप या रोने के बारे में नहीं बताता (45:15), इसलिए उनका पुन: मेल-मिलाप अकेले ही की ओर से ही था। बड़े भाई अभी तक यूसुफ़ से डरे हुए थे, और उन्हें अपने पाप का अंगीकार और यूसुफ़ से क्षमा की याचना करने में कई वर्ष लग गए (50:15-17)।

जब भी जीवित घराने के लोगों या परमेश्वर के आत्मिक घराने के लोगों बीच अलगाव होता है, पूरी रीति से पुन: मेल-मिलाप के लिए ईश्वरीय खेद व्यक्त करने की आवश्यकता होती है (लूका 15:18-21; 2 कुरि. 7:10) जो पापों का अंगीकार और क्षमा को लाता है (याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)। इन कार्यों में किसी प्रकार की देरी नहीं करनी चाहिए क्योंकि अधिक समय बीतने पर मन कठोर हो सकता है। क्षमा के साथ शांति भी दिया जाना चाहिए ताकि ऐसा न हो कि अपराधी मनुष्य (लोग) "बहुत उदासी में डूब जाए" (2 कुरि. 2:6-8) और अपने "आशा के घमंड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर" रहने में असफल हों जाए (इब्रा. 3:6; 6:11)। यद्यपि यूसुफ़ के भाइयों ने याकूब की मरने तक यूसुफ़ के सामने अपने पापों का अंगीकार करने में देर कर दी, पर उन्होंने अपने आशा के घमंड को थामें रखा कि परमेश्वर लगातार उन्हें आशीष देता रहेगा और अब्राहम और उसके वंश के साथ की गई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा (12:1-3; 15:5-21)।

समाप्ति नोट्स

[1]एल्मेर ए. मार्टेन्स, "בָּהַל," *TWOT* में, 1:92. [2]"पिता" शब्द का प्रयोग जा के द्वारा किसी भविष्य वक्ता को संबोधित करने के लिए किया जाता था (2 राजा 6:21) या तब जब उसके राजभवन में किसी उच्च पदाधिकारी का नाम सम्मान से लिया जाता था (यशा. 22:20, 21)। यह एक याजक (न्यायियों 17:10; 18:19) या सेना के उच्च अधिकारी के लिए भी लागू किया जा सकता था (2 राजा 5:13)। [3]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कमेंटरी, वोल. 1बी (नाशविल्ले: ब्रॉडमन & होलमन पब्लिशर्स, 2005), 815. [4]जॉन टी. विल्लिस, *जेनेसिस,* द लिविंग वर्ड कमेंटरी (ऑस्टिन, टेक्सस.: स्वीट पब्लिशिंग कम., 1979), 426. एक

मिस्री पत्र तिथि तेरहवीं शताब्दी ई.पू. में वर्णित है कि बेडोइन जाति (चरवाहे) के लोग एदोम से आकर किस प्रकार अपने और अपने जानवरों को जीवित बचाए रखने के लिए इस स्थान में फैल गए और बढ़ते चले गए। (जॉन ए. विल्सन, ट्रांस., "द रिपोर्ट ऑफ़ अ फ्रंटियर ऑफिसियल," इन *एन्सिएन्ट नियर टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेंट,* 3d, एड. जेम्स बी. प्रिचार्ड [प्रिन्सटोन, एन.जे.: प्रिन्सटोन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969], 259.) [5]"टार्गुम ऑफ़ ओन्केलोस," इन *द टार्गुम ऑफ़ ओन्केलोस एण्ड जोनाथन बने उज़्ज़िएल ऑन द पेंटाट्युक,* ट्रांस. जे. डबल्यू इथेरिज. (न्यू यॉर्क: KTAV पब्लिशिंग हाउस, 1968), 142. [6]विक्टर पी. हेमिल्टन, *द बुक ऑफ़ जेनेसिस: चैप्टर्स 18-50,* द न्यू इन्टरनैशनल कमेंटरी ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रान्ड रैपिड्स, मिच.: विम. बी. ईर्द्मंस पब्लिशिंग कं., 1995), 581. [7]NASB इब्रानी शब्द טוב *(टब)* का अनुवाद "उत्तम" करता है, जबकि KJV उसका अनुवाद "अच्छा" करता है। यहाँ इसका अभिप्राय "भौतिक वस्तुओं से है, जो यूसुफ़ के परिवार के लोगों को प्राप्त होंगी (45:18, 20, 23)। (एंड्रू बोलिंग, "טוב," *TWOT* में, 1:346.) [8]अब्राहम से समय से ही कभी-कभार मिस्र को एक ऐसे स्थान के रूप में भी देखा जाता था जहाँ मनुष्यों और पशुओं को भोजन मिल सकता था (12:10)। परन्तु फ़िरौन समेत मिस्र के सब लोग, परोपकार और अतिथि-सत्कार के लिए नहीं जाने जाते थे; बल्कि लोग उनसे डरते थे क्योंकि वे परदेशी पुरुषों को मारकर उनकी पत्नियों को बलपूर्वक अपना बना लेते थे। यूसुफ़ के समय में अकाल लम्बा और प्रभावशाली था तथा वह पहले के सभी अकालों से अधिक भयंकर था। यह स्पष्ट था क्योंकि जब अब्राहम और उसके परिवार को मिस्र छोड़ना पड़ा और वे वापस कनान में आए, तो वचन में लिखा है कि वे उस समय पशु-धन में सम्पन्न थे और वे अपनी भूमि में लौटकर फूले फले (13:1-6)। [9]इसके पश्चात, अपनी मृत्युशय्या पर, याकूब ने जन्म की प्राथमिकता को अनदेखा करते और इसके क्रम को उलटा करते हुए आशीषों के महत्व को यहूदा और यूसुफ़ के पक्ष में रखना उचित समझा होगा (49:8-10, 22-26)। [10]गोर्डन जे. वेन्हम, *जेनेसिस 16-50,* वर्ड बिब्लिकल कमेंटरी, वोल. 2 (डालस: वर्ड बुक्स, 1994), 432.